भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिषद, पटना में प्राकृतिक खेती पर शोध प्रारंभ

पूर्वी क्षेत्र के लिए भूमि और जल ससांधनों के प्रबंधन , खाद्यान्नप्रबागवानी, जलीय फसलों, मात्स्यिकी, पशुधन और कुक्कु ट, कृषि प्रसंस्क रण तथा सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर अनुसंधान कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना में 'प्राकृतिक खेती' जो भारत सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है , का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. आशुतोष उपाध्याय द्वारा किया गया । डॉ. उपाध्याय ने बताया कि इस परियोजना का शुभारंभ विगत संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक में लिए गए निर्णयों के आधार पर हुआ है । विदित हो कि इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना की जिम्मेदारी संस्थान के डॉ. अनिल कुमार सिंह , प्रधान वैज्ञानिक को दी गई , जो इस परियोजना के प्रधान अन्वेषक भी हैं । प्राकृतिक खेती के साथ-साथ जैविक खेती , समेकित पोषण प्रबंधन एवं रासायनिक खेती के साथ इनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इस परियोजना से यह निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाएगा कि दीर्घकाल में बदलते जलवायु के परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त विभिन्न कृषि प्रणालियों में कौन सी कृषि प्रणाली बेहतर है और क्यों है। परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने बताया कि इस परियोजना की अवधि 6 वर्ष है एवं इस अवधि में उनके साथ-साथ परियोजना की पूरी टीम मिलकर काम करेगी , जिसमें डॉ. मोनोब्रुल्लाह, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) ; डॉ रचना दुबे , वरिष्ठ वैज्ञानिक (पर्यावरण विज्ञान) ; डॉ. पवनजीत , वैज्ञानिक (भूमि एवं जल प्रबंधन) ; डॉ. कीर्ति सौरभ , वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) ; डॉ अभिषेक कुमार दुबे , वैज्ञानिक (पादप-रोगविज्ञान), डॉ. राकेश कुमार , वेज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन) ; डॉ. रोहन कुमार रमण , वैज्ञानिक (कृषि सांख्यिकी); डॉ. वेद प्रकाश , वैज्ञानिक (कृषि मौसम विज्ञान) एवं डॉ. सोनाका घोष , वैज्ञानिक (शस्य विज्ञान) होंगे।